पापांकुशा एकादशी — चयनित पूर्ण अध्याय का पुनर्कथन

Papankusha Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — Padma Purana 6.59, exact controlling revision 336441. Also compared: Wikisource revision API — complete matching archived content; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — source/adaptation licence; Wisdomlib / N. A. Deshpande — full chapter 59 English comparison only; modern prose not copied.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.59.1–28, Sanskrit Wikisource revision 336441, not a transcription of the original text.

पद्मनाभ की स्तुति और परस्पर सम्मान

KATHA 6.59.1–10

युधिष्ठिर आश्विन शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम पूछते हैं। कृष्ण उसे पापांकुशा बताते हैं और उस दिन पद्मनाभ रूप की पूजा का वर्णन करते हैं। वे इन्द्रिय-संयम वाले दीर्घ तप के फल को गरुड़ध्वज विष्णु के प्रणाम से जोड़ते हैं। उनके नाम-स्मरण को पृथ्वी के तीर्थों और पवित्र स्थानों के पुण्य से तुलनीय कहते हैं। शार्ङ्गधारी जनार्दन की शरण तथा संयोग से एकादशी करने को भी यम की यातना से बचाने वाला कहा गया है, यहाँ तक कि बड़े अपराधों का उल्लेख करते हुए भी। यह स्रोत की मुक्ति-सम्बन्धी वाणी है, अपराध छिपाने, उत्तरदायित्व टालने या पीड़ित की सहायता रोकने की अनुमति नहीं।

इसके बाद कृष्ण दोनों दिशाओं में देव-निन्दा की चेतावनी देते हैं: वैष्णव होकर शिव की निन्दा और शैव-पाशुपत होकर विष्णु की निन्दा। पाठ इनके लिए नरक और दूसरे प्रसंग में चौदह इन्द्रों तक रौरव की दण्ड-कल्पना कहता है। यह धार्मिक अलंकारिक चेतावनी है, दूसरे समुदाय को धमकाने या कोई दण्ड देने का अधिकार नहीं। इस अध्याय में शिकारी का चरित्र या उसकी मृत्यु की कहानी नहीं आती; यहाँ पूरा शिक्षात्मक संवाद ही चुना हुआ प्रसंग है।

Yudhishthira asks the name of Ashvina's bright Ekadashi. Krishna identifies Papankusha and describes worship of Padmanabha. He compares bowing to eagle-bannered Vishnu with the fruit of prolonged, disciplined austerity, and remembrance of his names with the merit of earthly pilgrimage sites. Refuge in bow-bearing Janardana and even incidental observance are praised as protection from Yama's punishment, including when serious wrongdoing is mentioned. This is the source's liberation language, not permission to conceal wrongdoing, evade accountability or withhold help from victims.

Krishna then warns in both directions against deity-denigration: a Vaishnava insulting Shiva and a Shaiva/Pashupata insulting Vishnu. The text uses hell imagery, including Raurava for fourteen Indra-periods in the latter case. This is a religious warning, not authority to threaten another community or punish anyone. No hunter character or death story occurs in this chapter; the complete teaching dialogue is the selected account.

माहात्म्य, पूर्वज और दिव्य चित्र

KATHA 6.59.11–21

कृष्ण पद्मनाभ के व्रत को अद्वितीय पवित्रता वाला बताते हैं। पाठ पाप के रहने और उपवास द्वारा हटने का कथन करता है, फिर सहस्र अश्वमेध और सैकड़ों राजसूय के साथ तुलना देकर एकादशी को उनसे भी श्रेष्ठ कहता है। बहाने से किये गये आचरण की प्रशंसा भी आती है। स्वर्ग, मोक्ष, शारीरिक आरोग्य, जीवनसाथी, पुत्र, धन और मित्र इसके धार्मिक फल कहे जाते हैं। गंगा, गया, काशी, पुष्कर और कुरुक्षेत्र से भी इसकी महिमा बड़ी बतायी जाती है।

रात्रि-जागरण और उपवास को विष्णुपद से जोड़ा गया है। माता, पिता और पत्नी के पक्ष के दस-दस व्यक्तियों के उद्धार का वर्णन आता है। दिव्य चार-भुज रूप, गरुड़-चिह्न, मालाएँ और पीले वस्त्र पहने हरिधाम जाने का चित्र है; चुने हुए संस्कृत में पीतवस्त्र हैं, तुलना के अंग्रेजी पाठ में सफेद वस्त्र मिलते हैं। बाल्य, युवावस्था और वृद्धावस्था की प्रशंसा के साथ अन्त में हरिलोक और पाप-मुक्ति कहा गया है।

ये धार्मिक फल-कल्पनाएँ हैं, स्वास्थ्य, संतान, धन, मित्र, संकट-मुक्त जीवन या पूर्वजों की स्थिति की गारंटी नहीं। बच्चों, वृद्धों या किसी व्यक्ति को उपवास अथवा जागरण के लिए बाध्य न करें। बीमारी और परिवार की कठिनाई को पूजा की कमी का परिणाम न मानें।

Krishna praises Padmanabha's observance as uniquely purifying. The discourse speaks of sin remaining until fasting removes it, then ranks Ekadashi above thousands of Ashvamedha and hundreds of Rajasuya sacrifices; it also praises observance under a pretext. Heaven, liberation, bodily health, a spouse, sons, wealth and friends are named as religious fruits. Its greatness is compared favourably with Ganga, Gaya, Kashi, Pushkara and Kurukshetra.

Vigil and fasting are associated with Vishnu's abode, and deliverance is claimed for ten people each on the mother's, father's and wife's sides. A heavenly image follows: four arms, Garuda emblems, garlands and yellow garments. The selected Sanskrit has yellow garments; the English comparison has white. Praise extends to childhood, youth and old age, ending with Hari's world and freedom from sin.

These are religious assurances, not guarantees of health, children, wealth, friends, immunity from adversity or an ancestor's condition. Do not compel children, older people or anyone else to fast or keep vigil, or attribute illness and family difficulty to insufficient worship.

दान, सामर्थ्य और संवाद का समापन

KATHA 6.59.22–28

पाठ दान में सोना, तिल, भूमि, गाय, अन्न, जल, जूते, छाता और वस्त्र का उल्लेख करता है तथा इन्हें यम-दर्शन से मुक्ति के फल से जोड़ता है। फिर बिना पुण्य-कर्म बीतते दिन की तुलना लोहार की धौंकनी से करता है, जो साँस-जैसी हवा चलाती है पर जीवित नहीं है। यह उपमा मनुष्य की गरिमा घटाने का आधार नहीं है। निर्धन व्यक्ति के लिए भी अपनी शक्ति के अनुसार स्नान और दान जैसे अच्छे कर्मों की चर्चा है; सामर्थ्य का शब्द महत्त्वपूर्ण है, खरीदारी या पशु-दान अनिवार्य नहीं।

होम, स्नान, जप, ध्यान और यज्ञ-सत्र जैसे कर्मों की प्रशंसा के बाद दीर्घ जीवन, धन, कुलीनता और रोगहीनता को पुण्य से जोड़ा गया है। इसके विपरीत अधर्म से दुर्गति और धर्म से स्वर्ग का कथन है। हम इसे स्रोत की धार्मिक नैतिक भाषा के रूप में रखते हैं, गरीबी, बीमारी या जन्म के आधार पर किसी का मूल्यांकन नहीं करते। किसी की जाति या कुल उसके अधिकार और सम्मान तय नहीं करते।

अन्तिम पद में कृष्ण कहते हैं कि राजा का पूछा हुआ पापांकुशा माहात्म्य कह दिया गया, और पूछते हैं कि अब क्या सुनना चाहते हैं। अलग समापन-वाक्य अध्याय 59 और आश्विन शुक्ल पापांकुशा को पहचानता है। यह पूरे चयनित अध्याय का पुनर्कथन है, सुनिश्चित फल वाला दान या पूजा-मैनुअल नहीं।

The text lists gifts of gold, sesame, land, a cow, food, water, footwear, an umbrella and clothing and associates them with avoiding Yama. It compares days without meritorious acts to a blacksmith's bellows, moving air like breath without living. This analogy is not grounds to diminish anyone's dignity. Even a poor person is encouraged to undertake good acts such as bathing and giving according to capacity; capacity matters, and purchases or animal gifts are not compulsory.

After praising fire offerings, bathing, recitation, meditation and sacrificial sessions, the source connects merit with longevity, wealth, noble birth and absence of disease. It contrasts unrighteousness leading to adversity with righteousness leading to heaven. These remain the source's religious moral language, not judgments of poverty, illness or birth. Caste or lineage does not determine rights or dignity.

In the final verse Krishna says he has answered the king's question about Papankusha and asks what else he wishes to hear. The separate colophon identifies chapter 59 and Ashvina's bright Papankusha. This completes the selected chapter's retelling; it is not a donation or worship manual with guaranteed results.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Papankusha Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.59.1–28, revision 336441, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement is implied. This notice applies to the retelling and its language layers, not unrelated site content or code. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Source attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.